

युनिवर्सिटी गीत

अमे उत्तर गुर्जर वासी,
अमे ज्ञान तेजना प्यासी,
सपनां सरजी सार्थक करवा पृथ्वी पटे अभ्यासी,
विराट विश्वने अंतर धरवा सतत ज्ञान अभिलासी,
आनर्ते आ विद्याधामे सरस्वती सडवासी,
पावनकारी शुचिस्मिताना विद्यापीठ निवासी.
अमे पट्टनपुरना विद्यापीठना ज्ञान पिपासु छैया,
रक्षण करती पावन करती सरस्वती मैया !
ज्ञानदीपथी उज्जवण करशुं लोक-लोकनां हैयां,
उती लुप्त ते थर्छ सजीवन, पार करो अम नैया.

– स्व. यंदूवहन यी. मडैता